स्वाधीनता आन्दोलन में काँगड़ा के गांधी युग के स्वतन्त्रता सेनानी पहाड़ी गाँधी बाबा कांशीराम का योगदान

डॉ अमर सिंह पराशर
ऐसोसिएट प्रोफेसर, विभाग इतिहास राजकीय महाविद्यालय धर्मशाला (हि.प्र.)

सार :- (Abstract) भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन की वागडोर जव महात्मा गांधी के हाथों में आई तो उन्होंने सत्य, अहिंसा, भूख हड़ताल स्वदेशी वस्तुओं के बहिष्कार, असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन जैसे राजनीतिक तारीकों का सहारा लिया तो काँगड़ा के पहाड़ी क्षेत्र के पहाड़ी गाँधी बाबा कांशीराम इनके सम्पर्क में आये देश की आज़ादी में बराबर की हिस्सेदारी निभाई ।

1. *भूमिका* -

पहाड़ी गाँधी बाबा कांशीराम, महात्मा गाँधी के नेतृत्व में काँगड़ा के पहाड़ी क्षेत्रों में आज़ादी की लडाई में प्रेरणा के स्त्रोत रहे हैं।

2. साहित्य की समीक्षा -

मैंने यह शोध शिर्षक इसलिए चुना है क्योंकि भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन तथा आज़ाद हिन्द फौज़ पर अनेक शोध कार्य किए गये हैं। परन्तु कॉगड़ा के स्वतंत्रता सेनानियों ने भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में जो सक्रिय कार्य किया और भारत की आज़ादी में जो अपना योगदान दिया, इस पर आज दिन तक किसी भी शोधार्थी ने गहनता से शोध नहीं किया है ।

3. उद्देश्य -

इस शोधकार्य में शोधार्थी का उद्देश्य काँगड़ा क्षेत्र के स्वतंत्रता सेनानियों, आज़ाद हिन्द फौज़ के सैनिकों तथा आम जनता की राजनीतिक गतिविधियों व कुर्वानियों को भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के साथ जोड़ना हैं ।

4.कार्यप्रणाली -

इस शोधकार्य में शोधार्थी ने मौखिक तथा हस्तलिखिक दोनों प्रकार की सामग्री को प्रयोग में लाया गया है। मौखिक सामग्री शोधार्थी ने अति दुर्लभ स्थानों जाकर साक्षात्कारों के माध्यम से इक्कट्ठी की गयी है तथा लिखिक सामग्री के लिए शोधार्थी ने समस्त काँगड़ा क्षेत्र का सर्वेक्षण किया है ।

5 योगदान -

पहाड़ी गाँधी बाबा कांशीराम का जन्म वर्तमान हिमाचल प्रदेश के जिला काँगड़ा के डाडासीबा के गाँव पदयाली में पंडित लखनुराम के घर 11 जुलाई, 1882 को हुआ । इनकी प्रारम्भिक शिक्षा अपने गाँव में ही हुई। 1891 में, 9 वर्ष की उम्र में ही, इनका विवाह श्रीमती सरस्वतीदेवी से हो गया था ।[1] गाँव की चौपाल पर साथियों के साथ बैठकर लोकगीतों को गाना, नाटक खेलना और नवरात्रों में रामलीला में भाग लेना आदि कांशीराम के बाल्यकाल के शौक थे। 1893 में इनके पिता का और उसके एक वर्ष बाद ही 1894 में उनकी माता का भी स्वर्गवास हो गया। उसके बाद वे अपने तायाजी के साथ रहने लगे। 12 वर्ष की आयु में नूरपुर जाकर एक वकील के पास मुन्शी की नौकरी कर ली, परन्तु इस व्यवसाय में उनका मन नहीं लगा ।[2]

उन दिनों सम्पूर्ण भारतवर्ष में स्वतन्त्रता आन्दोलन तेज़ी से आगे बढ़ रहा था । आज़ादी के दीवाने देश की स्वतन्त्रता के लिए अपने प्राणों की आहुति दे रहे थे। किशोराबस्था में कांशीराम पर स्वाधीनता की इन गतिविधियों का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक ही था। आन्दोलन, स्वराज्य, क्राँतिकारी और क्राँति के रूप में नये परिभाषित शब्द शनैः शनैः कांशीराम की समझ में आने लगे थे ।

1902 में, बाबा कांशीराम अपने एक मित्र के साथ लाहौर चले गए । लाहौर में इनका परिचय काँगड़ा क्षेत्र से सम्बन्धित कुछ युवकों से हुआ, जो आजीविका कमाने हेतु यहाँ आए थे। साहूकार इनका खूब शोषण करते थे शोषण की इन घटनाओं से कांशीराम का दिल दहल उठा । मानवता की स्वतन्त्रता के मायने उन्हें समझ आने लगे थे। बाल्यकाल की इन्हीं घटनाओं ने उनकी स्वाधीनता आन्दोलन की पृष्ठभूमि तैयार की ।

बाबा कांशीराम लाहौर आजीविका कमाने के लिए आए थे, परन्तु तत्कालिक घटनाओं ने उन्हें स्वाधीनता सँग्राम के आग्रणि सेनानियों के समीप लाकर खड़ा कर दिया। उस समय बाबा कांशीराम का सर्म्पक जिन स्वतन्त्रता सेनानियों से हुआ उनमें श्री हरदयाल, सूफी रमज़ाहिद शाह एवं सरदार अजीतसिंह आदि प्रमुख थे । इन देश भक्तों ने जहाँ बाबा कांशीराम को देश की आज़ादी के लिए प्रेरित किया, वहीं उन्होंने पहाड़ी में देश भक्ति की कविताएँ भी लिखनी प्रारम्भ की। लाहौर रहते ऐसे देश भक्तों के सम्पर्क में आने से बाबा कांशीराम की जीवन की दिशा ही बदल गई । उस समय के लोकप्रिय लोक गीत 'पगड़ी संभाल जट्टा' के लेखक 'लालचन्द फलक बांके दयाल' से भी वे अत्याधिक प्रभावित हुए ।[3]

1905 के भूकम्प में काँगड़ा में भारी क्षति हुई। लाल लाजपतराय के नेतृत्व में काँग्रेस पार्टी की ओर से राहत कार्य शुरू हुआ था। बाबा कांशीराम भी उन में सम्मिलित हुए। उसी समय उनका सम्पर्क लाला लाजपतराय जी से बढ़ा। 1906 में उनकी भेंट सूफी अम्बाप्रसाद तथा मौलवी बरकत उल्लाह जैसे देश भक्तों से हुई। 1908में लाला हरदयाल एम ए के सम्पर्क में आने से देश को आज़ाद कराने में तत्पर हो गये ।[4]

1911 में देश भक्त साथियों सहित दिल्ली दरबार देखने गए। लॉर्ड हार्डिंग पर बम फैंकने की घटना के कारण उनके साथी बिखर गए। उसके उपरान्त ब्रिटिश सरकार का दृष्टिकोण बदला। दमन चक्र शुरू हुआ। अनेक राष्ट्रभक्त बन्दी बनाए गए, परन्तु इस घटना ने आन्दोलनकारियों के हौंसले बुलन्द कर डाले। बम काण्ड के बाद जनता को अँग्रेज़ों की यातनाओं का शिकार होना पड़ा। बाबा कांशीराम इससे अत्यन्त दुःखी हुए। 1917 में, उनकी धर्मपत्नी सरस्वती देवी का देहान्त हो गया । इससे बाबा कांशीराम को गहरा आघात पहुँचा। इसी अन्तराल में उन्हें पारिवारिक परिस्थितियों के कारण अपने गाँव वापस आना पड़ा।[5] इन दिनों उनके ताया जी गाँव में दुकानदारी करते थे। बाबा कांशीराम ने भी उनके साथ सांझीदारी कर ली। उन दिनों काँगड़ा की मण्डियां होशियारपुर और अमृतसर होती थी ।

1919 में, रोलेट एक्ट के विरोध में जब अमृतसर नृशंस हत्याकाण्ड हुआ, उस समय कांशीराम दुकानदारी के काम से वहीं पर थे। इस घटना ने उनके भीतर देशभक्ति की भावना को और उत्तेजित किया। उन्होंने महात्मा गाँधी का 'अनुचर' बनकर देशोद्धार करने का संकल्प

लिया। उन्होंने 1919 में, सत्याग्रह का हल्फ़नामा भरा और क्राँतिकारी बाबा कांशीराम ने काँग्रेस में प्रवेश किया । स्वतन्त्रता संघर्ष की अमिट प्रेरणा लेकर उन्होंने अपने क्षेत्र में कार्य करना आरम्भ किया। 1919 में उन्हें बन्दी बनाने के लिए पुलिस ने घर पर छापा मारा और उन्हें अँग्रेजी राज के खिलाफ़ कार्य करने के जुर्म में अगस्त,1920 में पहली बार बन्दी बनाया गया। कुछ दिनों में काँग्रेस के आन्दोलन को तेज़ करने के जुर्म में, 1921 में दूसरी बार जेल धर्मशाला एवं गुरदासपुर के जेलों में दो साल यातनाएँ झेलनी पड़ी। उन दिनों पंजाब के नेता डा सैफूदीन कीचलू और डा सतपाल को भी माडले जेल से धर्मशाला जेल लाया गया था ।

21 अगस्त, 1922 को लाला लाजपतराय को लाहौर से धर्मशाला जेल लाकर बन्द कर दिया गया। काँगड़ा के कॉमरेड रामचन्द्र, पंचमचन्द कटोच, पंण्डित सर्वमित्र नादौन, लाल बाशीराम अग्रवाल आदि स्वतन्त्रता सेनानी भी उसी जेल में बन्द थे। उस समय बाबा कांशीराम का परिचय इन देशभक्तों से जेल में हुआ । यहाँ उन्हें लाला लाजपतराय से स्वतन्त्रता आन्दोलन की प्रेरणा का मूलमन्त्र उपलब्ध हुआ। यहाँ जेल से उन के असली जीवन की शुरूआत हुई ।[6] जेल जीवन की दुर्दशा और व्यय की छाप उनकी कविताओं में साफ दिखाई पड़ती है -:

''भारत माँ है मेरी माता
वह जंजीरों जकड़ी है
वह अँग्रेज़ों पकड़ी है
कांशी उस जो आज़ाद कराना है।''[7]

11 नवम्बर, 1922 को वह जेल से रिहा हुए।[8] 1927 में, हमीरपुर के सुजानपुर के 'ताल' नाम स्थान पर स्वाधीनता आन्दोलन से सम्बन्धित 'राजनैतिक सभा' का आयोजन किया। इस सभा में कई राष्ट्रीय नेताओं जैसे श्रीमती सरोजनी नायडू, लाहौर से मेलाराम एवं मास्टर कुन्दन लाल आदि ने भाग लिया । इस सभा में काँगड़ा के पहाड़ी क्षेत्रों के हज़ारों लोग उस दिन वहाँ एकत्रित हुए । इस के इलावा इस सभा में स्थानीय नेताओं जैसे बाबा कांशीराम, ठाकुर हज़ारासिंह तथा गोपालसिंह ने भी लोगों को अपने भाषणों से स्वतन्त्रता आन्दोलन के प्रति जागरूक किया।

बाबा कांशीराम के स्वाधीनता आन्दोलन सम्बन्धी गीतों और कविताओं को सुनकर श्रीमती सरोजनी नायडू ने इस सभा में उन्हें 'बुलबुल ए पहाड़' की उपाधि से सम्मानित किया ।[9] उन्हें फिर जेल की हवा खानी पड़ी । वहाँ से रिहा होने पर 1928 में कलकत्ता में ऑल इण्डिया काँग्रेस कान्फ्रेंस में भाग लिया । 1930 में, स्वतन्त्रता आन्दोलन की लड़ाई में, उन्हें कटक में जेल काटनी पड़ी। 1930 में उन्होंने महात्मा गाँधी के द्वारा चलाये गये सविनय अवज्ञा आन्दोलन में बढ़ चढ़ कर भाग लिया ।[10]

23 मार्च, 1931 के दिन सरदार भगतसिंह, राजगुरू तथा सुखदेव को लाहौर में फाँसी देने की घटना से बाबा कांशीराम अत्यधिक प्रभावित हुए । इस घटना के बाद ही आजीवन काले वस्त्र धारण कर ब्रिटिश सरकार से जूझने का व्रत लिया । तभी से वह 'स्याहपोश जरनैल' कहलाए ।[11]

1933 में कुल्लू में 'आर्य समाज' का विशाल अधिवेशन हुआ जिसमें बाबा कांशीराम ने अपने साथियों सहित भाग लिया।[12] मई, 1934 में पंजाब प्रदेश काँग्रेस बार्षिक अधिवेशन जालन्धर में हुआ, इसमें उन्होंने सक्रिय भाग लिया ।[13] 1937 में गढ़दीवाला (होशियारपुर) की विशाल जनसभा में पंण्डित जवाहरलाल नेहरू ने उनके भीतर स्वाधीनता की लगन देखकर उन्हें 'पहाड़ी गाँधी' की उपाधि से सम्मानित किया था। उन्होंने अपनी सुरीले कण्ठ द्वारा कविताएँ गा गा कर स्वतन्त्रता का सन्देश काँगड़ा के समस्त पहाड़ी क्षेत्रों के गाँवों में जन जन तक फैलाया।[14]

1939 में बाबा कांशी राम ने काँगड़ा क्षेत्र के स्वतन्त्रता सेनानियों के साथ मिल कर गाँव गाँव में जनसभाओं को सम्बोधित किया। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जब अँग्रेज़ों ने स्वाधीनता सेनानियों का दमन प्रारम्भ किया, उस समय बाबा कांशीराम को पुनः धर्मशाला जेल में बन्दी बनाया गया। जून, 1940 में जिला काँगड़ा के ज्वालामुखी में राजनैतिक सम्मेलन का आयोजन हुआ। सम्मेलन के आयोजन के लिए गठित काँग्रेस स्वयं सेवक दल का नेतृत्व बाबा कांशीराम ने ही किया। अप्रैल, 1941 में 'भारत सुरक्षा अधिनियम' के अन्तर्गत बाबा कांशीराम को पुनः जेल भेज दिया गया।[15]

बाबा कांशीराम के जीवन के दो पक्ष हमारे समक्ष उभर कर आते हैं । पहले पक्ष के अन्तर्गत तो स्वतन्त्रता सँग्राम से सम्बन्धित विभिन्न गतिविधियों में भाग लेना गिनाया जा सकता है तथा दूसरे पक्ष के अन्तर्गत स्वाधीनता सँग्राम तथा सामाजिक उत्थान से सम्बन्धित पहाड़ी भाषा में साहित्य सृजन को रखा जा सकता है । उन्होंने समाज में व्याप्त अंधविश्वासों और कुरीतियों के प्रति लोगों को अपने गीतों और कविताओं के माध्यम से जागृत किया । उन्होंने इस सत्य को बार बार दोहराया कि जब तक समाज में नई सोच, नई चेतना नहीं आएगी, देश को आज़ादी मिलना संभव नहीं। उन्होंने अपने जीवन काल में पहाड़ी भाषा में पाँच सौ से अधिक कविताओं की रचना की। इसकी रचनाओं में तत्कालीन समाज का चित्रण, अँग्रेज़ों की शोषण नीति का विरोध, अन्धविश्वासों के प्रति जागृति, देश की स्वतन्त्रता हेतु बलिदान की भावना आदि विषयों का समावेश था। देश को आज़ाद करवाने और उसका पुर्ननिर्माण कर स्वर्ग बनाने की भावना उनके इस गीत में मिलती है -

''आओ रलि मिली सारे हिन्द जो आज़ाद कराइए।
नरक बणी गया देश असां दा, फिरतों सुरग बनाइए।''[16]

गाँव गाँव घूमकर आज़ादी के गीत और कविताएँ सुनकर लोगों में स्वतन्त्रता की चेतना जगाना उनकी सांसें बन गई थीं। अपने लक्ष्य के संघर्ष से निरन्तर जूझते हुए बाबा कांशीराम 15 अक्तूबर, 1943 के दिन चिर निद्रा में सो गए । यद्यपि भारत की आज़ादी के उस दिन को वे न देख सके, जिनकी उन्हें चिर प्रतीक्षा थी, परन्तु उनका जीवन हमें सदा प्रेरणा प्रदान करता रहेगा। वास्तव में उनका जीवन अपने में ही एक संघर्ष की जीवन्त कहानी है।[17]

23 अप्रैल, 1984 के दिन प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने स्वयं ज्वालामुखी में पहुँचकर मुख्यमन्त्री श्री वीरभद्रसिंह, केन्द्रीय संचार मन्त्री श्री वीएन गाडगिल तथा सांसद प्रो नारायणचन्द पराशर समेत अपार जनसमूह में पहाड़ी गाँधी बाबा कांशीराम जी की स्मृति में विशेष डाक टिकट जारी किया । हिमाचल प्रदेश सरकार ने भी उनकी जन्मशती धूमधाम से मनाई तथा उनके नाम पर पहाड़ी भाषा व साहित्य में योगदान के लिए राज्य सम्मान की स्थापना की।[18]

भरत की प्रथम महिला प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी जी ने पहाड़ी गाँधी बाबा कांशीराम जी को प्रमुख पहाड़ी कवि तथा स्वाधीनता सेनानी कहकर ज्वालामुखी में श्रद्धाजंली भेंट की थी । वे नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की क्राँतिकारी विचारधारा के भी प्रबल समर्थक थे ।

6. निष्कर्ष -

इस प्रकार स्वतन्त्रता के इस लम्बे संघर्ष में बाबा कांशीराम ने जिस देश भक्ति, देश प्रेम, निष्ठा, त्याग, बलिदान का परिचय दिया वह स्वतन्त्रता के इतिहास में स्मरणीय रहेगा ।

7. संदर्भ सूची -

1.शर्मा, शम्मी: *पहाड़ी गाँधी बाबा काँशीराम,* पोथीघर प्रकाशन, सेराथाना धर्मशाला, 1991 पृष्ठ 1; देखिये, साक्षात्कार:*श्री विनोद शर्मा* पोता बाबा काँशीराम, परिशिष्ट (12) पृष्ठ 387, Dr. Amar Singh Prashar: *Ph.D Thesis, Contribution of Freedom Fighters and Martyrs of Kangra 1805-1947.*

2. *वीर प्रताप*: जालन्धर, 23 अप्रैल, 1984; *cited by. The Sunday Tribune*: Chandigarh, July 8, 1984.

3. शर्मा, शम्मी: *पहाड़ी गाँधी बाबा काँशीराम,* पोथीघर प्रकाशन, सेराथाना धर्मशाला, 1991 पृष्ठ1. ; देखिये, अरूण, नरेन्द्र :*पहाड़ी गाँधी बाबा काँशीराम,* हिमाचल अकादमी, शिमला, 1995 पृष्ठ 8,9.

4. *वीर प्रताप*: जालन्धर, 23 अप्रैल, 1984; देखिये, *जनसत्ता*: चण्डीगढ़, 23 अप्रैल, 1984.

5. अरूण, नरेन्द्र :*पहाड़ी गाँधी बाबा काँशी राम,* हिमाचल अकादमी, शिमला, 1995 पृष्ठ 9; देखिये,*हिमधारा*सितम्बर : दिसम्बर, 1976 अंक 5,6.

6.*राजनैतिक कैदियों की लिस्ट,* जेल धर्मशाला, 1922 46 परिशिष्ट (2) पृष्ठ 369, Dr. Amar Singh Prashar: *Ph.D Thesis, Contribution of Freedom Fighters and Martyrs of Kangra 1805-1947*; देखिये हिमाचल प्रदेश सरकार :*हिमाचल प्रदेश के स्वतन्त्रता सेनानी, खण्ड प्रथम,* भाषा एवं संस्कृति विभाग, शिमला, 1985 पृष्ठ 57.

7. हिमाचल प्रदेश सरकार: *संघर्ष के वे दिन,* भाषा एवं संस्कृति विभाग, शिमला, 1989 पृष्ठ 77.

8. हिमाचल प्रदेश सरकार:*हिमाचल प्रदेश में स्वतन्त्रता संग्राम का संक्षिप्त इतिहास,* भाषा एवं संस्कृति विभाग, शिमला,1996 पृष्ठ 80.

9. शर्मा, शम्मी: *पहाड़ी गाँधी बाबा काँशी राम,* पोथीघर प्रकाशन, सेराथाना धर्मशाला, 1991 पृष्ठ 2; देखिये, *जनसत्ता*: चण्डीगढ़, 23 अप्रैल, 1984, 21 मार्च, 1993.

10. हिमाचल प्रदेश सरकार: *हिमाचल प्रदेश में स्वतन्त्रता संग्राम का संक्षिप्त इतिहास,* भाषा एवं संस्कृति विभाग, शिमला, 1996 पृष्ठ 90, 100.

11. हिमाचल प्रदेश सरकार :*हिमाचल प्रदेश के स्वतन्त्रता सेनानी, खण्ड प्रथम,* भाषा एवं संस्कृति विभाग, शिमला, 1985 पृष्ठ 57; देखिये, हिन्दु: जालन्धर, 13 जनवरी, 1993 पृष्ठ 11.

12. हिमाचल प्रदेश सरकार: *हिमाचल प्रदेश में स्वतन्त्रता संग्राम का संक्षिप्त इतिहास,* भाषा एवं संस्कृति विभाग, शिमला, 1996 पृष्ठ 108.

13. वही, पृष्ठ 110.

14. हिमाचल प्रदेश सरकार :*हिमाचल प्रदेश के स्वतन्त्रता सेनानी, खण्ड प्रथम,* भाषा एवं संस्कृति विभाग, शिमला, 1985 पृष्ठ 57; देखिये, हिमाचल प्रदेश सरकार: *संघर्ष के वे दिन,* भाषा एवं संस्कृति विभाग, शिमला, 1989 पृष्ठ 77.

15. दीनानाथ :*जिला काँगड़ा काँग्रेस, स्वतन्त्रता सँग्राम का संक्षिप्त इतिहास,* हेमराज, भूतपूर्व संसद सदस्य, देहरा (गोपीपुर) काँगड़ा, (हि.प्र.)1985. पृष्ठ 10; देखिये, हिमाचल प्रदेश सरकार: *हिमाचल प्रदेश में स्वतन्त्रता संग्राम का संक्षिप्त इतिहास,* भाषा एवं संस्कृति विभाग, शिमला, 1996 पृष्ठ 123,135,140.

16. शर्मा, शम्मी: *पहाड़ी गाँधी बाबा काँशी राम,* पोथीघर प्रकाशन, सेराथाना धर्मशाला, 1991 पृष्ठ 5, 41; देखिये, अरूण, नरेन्द्र :*पहाड़ी गाँधी बाबा काँशी राम,* हिमाचल अकादमी, शिमला, 1995 पृष्ठ 103.

17. हिमाचल प्रदेश सरकार :*हिमाचल प्रदेश के स्वतन्त्रता सेनानी, खण्ड प्रथम,* भाषा एवं संस्कृति विभाग, शिमला, 1985 पृष्ठ 57; देखिये, हिमाचल प्रदेश सरकार: *संघर्ष के वे दिन,* भाषा एवं संस्कृति विभाग, शिमला, 1989 पृष्ठ 78.

18 वीर प्रतापजालन्धर : 23 अप्रैल, 1984, 1 मई1984. . ; देखिये, साक्षात्कार:*श्री विनोद शर्मा* पोता बाबा काँशी राम,परिशिष्ट (12) पृष्ठ 387, Dr. Amar Singh Prashar: *Ph.D Thesis, Contribution of Freedom Fighters and Martyrs of Kangra 1805-1947.*